Peer Reviewed Refered
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

AJANTA

Volume - VII, Issue - II,
April - June - 2018
ISSN 2277 - 5730

Impact Factor - 5.5
(www.sjifactor.com)

PART - II

AJANTA PRAKASHAN

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII Issue - II April - June - 2018

ENGLISH PART - II / MARATHI PART - II / HINDI

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	राजर्षी शाहू महाराज का आर्थिक क्षेत्र मे योगदान **प्रा. डॉ. सुनिल जी. नरांजे**	१-४
२	युगप्रवर्तनकारी राष्ट्र पुरूष : छत्रपती शाहू महाराज **प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश**	५-६
३	बहुजन हितैशिराज छत्रपति शाहू महाराज **डॉ. शंकरराव पजई**	७-८
४	स्त्री शिक्षा के पुरोधा छत्रपती शाहू जी महाराज **डॉ. (श्रीमती) सुमन शुक्ला**	९-१२
५	सामाजिक क्रान्ति के सूत्रधार : राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज **प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ**	१३-१६
६	आधुनिक भारत में सामाजिक लोकतंत्र के जनक : कोल्हापूर के राजर्षी छत्रपती शाहूजी महाराज (१८७४-१९२२) **श्री. चंद्रशेखर लक्ष्मणराव कोरे**	१७-२३
७	छत्रपति शाहूजी महाराज- ''आरक्षण के जनक और बहुजन प्रतिपालक'' **अनुज कुमार वर्मा**	२४-२८
८	सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत: छत्रपति शाहू महाराज **प्रा. प्रमोद कि. घन**	२९-३०
९	राजश्री छत्रपति साहू महाराज : जीवन परिचय और दलितों के सेवा में आरक्षण का कार्य **रश्मि बी. वी.**	३१-३५

VOLUME - VII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR -5.5 (www.sjifactor.com)

८. सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूतः छत्रपति शाहू महाराज

प्रा. प्रमोद कि. घन
सहायक प्राध्यापक, तोष्णीवाल महाविद्यालय, सेनगांव.

आधुनिक महाराष्ट्र के इतिहास में कोल्हापूर के राजा छत्रपति शाहू महाराज का नाम उल्लेखनिय है। उन्होने सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजकिय सुधारणाएँ करके जनकल्याण के लिए अपना समग्र जीवन समर्पित किया। एक आदर्श राजा, बहुजन, दलित, शोषित एवं पीडित जनों के राजा रहे है। उन्होने जातिभेद, अस्पृश्यता, स्त्रीयों का उध्दार, बहुजनो का विकास, औद्योगिक प्रगति, खेती, रास्ते इत्यादी क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। ऐसे महान राजा का जन्म 26 जून 1874 को जयसिंगराव आबासाहब घाटगे और उनकी धर्मपत्नि राधामाई के यहाँ हुआ। उनका मूल नाम यशवंतराव था। चौथे शिवाजी का अंग्रेज सरकार ने बहुत छल किया उनकी मृत्यु 25 दिसम्बर 1883 मे हो गई उन्हे कोई अपत्य न होने से कोल्हापूर संस्था का राजकारोबार देखने के लिए उन्हे दत्तक पुत्र की आवश्यकता थी। उस समय उनकी पत्नी आनंदीबाई घाटगे ने जयसिंगराव आबासाहेब घाटगे के पुत्र यशवंतराव को 17 मार्च 1884 को गोद मे लिया। गोद लेने के पश्चात यशवंतराव का नाम छत्रपति शाहू रखा गया। छत्रपति शाहू महाराज ने जाति निर्मुलन, सामाजिक सुधार, दलितों का उध्दार, दलितों को शिक्षण, छात्रावास, बलुता पध्दति, अस्पृश्यता निर्मुलन, आरक्षण आदि विषयों पर गंभीरता से ध्यान दिया।

वेदोक्त प्रकरण

छत्रपति शाहू महाराज धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण पूजा–अर्चा एवं तिर्थाटन करते थे, अक्तुबर 1899 में पंचगंगा नदी पर स्नान करते समय नारायण भट वेदोक्त मंत्रो के अलावा पूराणोक्त मंत्र उच्चारण कर रहा था। उस समय शाहू महाराज ने उन्हे पूछा तो नारायण भट ने कहा ''क्षुद्रों को पूराणोक्त मंत्र बताने पडते है, वैदिक मंत्र कहते समय स्नान की आवश्यकता होती है, क्षुद्रों को पूराणोक्त पध्दति का अग्रह करने के लिए मुझे स्नान की आवश्यकता नही।'' क्षत्रिय कुलवंत हिंदू पदपातशाह छत्रपति शाहू महाराज को उस समय नारायण भट ने क्षुद्र कहा और उसी समय से छत्रपति शाहू महाराज के मन में ब्राम्हणो के बाहय आडंबर के प्रति तिरस्कार और बहुजन समाज के प्रति सहानुभूति निर्माण हुई।

जाति निर्मुलन

समाज में विविध जाति और उपजातियाँ विद्यमान थी, उनके रहन–सहन और रीति–रिवाज में विभिन्नता थी जातिभेद की कल्पना रूढ थी इसलिए उन्होने सामाजिक एकता का मार्ग प्रस्तापित किया। हर जाति के लोगों में संगठन बढाना चाहिए, वैमनस्य को दूर करके आपसी भाईचारा निर्माण करना चाहिए इसके लिए शाहू महाराज ने प्रयास किये।

समाज सुधार

छत्रपति शाहू महाराज ने जातियता और जातिभेद नष्ट करने के लिए कई जगह पर प्रबोधनपर मार्गदर्शन किए, विषमता विरोधी परिषदों में निम्नजाति के लोगों के लिए पानी तथा मंदिर प्रवेश का प्रश्न आदि पर समाज

प्रबोधन किया वे कृतिशिल समाज सुधारक थे उन्होने गंगाराम कांबले नामक महार व्यक्ति को कोल्हापूर शहर के मुख्य चौराहे पर सत्यसुधारक होटेल की स्थापना करके दी और वे हर दिन इसी होटेल में चाय पिते थे इससे उनका समाज सुधारवादी दृष्टिकोन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

दलितों का शिक्षण

दलितों की स्थीति सुधारने के लिए शिक्षण ही महत्वपूर्ण है यह मानकर दलितों के लिए कई स्कुल खोले उस समय शिक्षण के क्षेत्र में ब्राम्हण लोगों की मक्तेदारी थी, उस समय मराठा लोगों को पढने की अनुमति नही थी, तो दलित समझी जानेवाली महार, मांग, चांभार तथा ढोर जातियों की स्थिति कैसी होगी? इसीलिए शाहू महाराज अस्पृश्यो के लिए अलग–अलग स्कुल खोले, उसमें महार और चांभारों के लिए चले आ रहे सांध्य विद्यालय को 28 नवम्बर 1906 को कायम मान्यता दी। चांभार और ढोरों के लिए नया स्कुल खुलवाया अस्पृश्य छात्रावास के लिए जगह दिलवायी और सभी अस्पृश्यों के लिय मुफ्त शिक्षण की व्यवस्था की। युरोपियन विदुषी मिस क्लार्क उस समय दलितो के लिए कार्य करती थी उसके नाम से छात्रावास शुरू किया, मराठा छात्रों के लिए भी विक्टोरिया छात्रावास की स्थापना की। महार, मांग, रामोसी, बेरड, गट्टे–चोर और कोली जातियों के लोगों को गुनहगार ठहराकर उन्हे पोलीस थाने में हर दिन जाना बंधनकारक था। 27 जुलाई 1918 को एक आदेश निकालकर छत्रपति शाहू महाराज ने इस पध्दति को बंद किया साथ ही पाटील, कुलकर्णी तथा चौगुला ये गांव के वतनदार महार जाति के लोगों से मुफ्त में काम करा के लेते थे इस पध्दति को भी उन्होने बंद किया।

अस्पृश्यता निर्मुलन

आज देश में 429 अस्पृश्य जातियां मानी जाती है। जातिभेद की वजह से अस्पृश्यता का उदय हुआ, शिवकाल तथा पेशवाई में इस दुष्प्रवृत्ति को अधिक बढावा मीला पेशवाई में तो पुना शहर में दलितों को सुबह के 9 तक और सायं 3 बजे के बाद घूमने के लिए भी मनाई थी, अपनी थुंकी रास्ते पर न पडे इसलिए उनके गले में मटका लटकाया जाता था शाहू महाराज ने इस द्वुष्टप्रवृत्ति को भी बंद कर दिया। 15 अप्रैल 1920 में नाशीक के मराठा छात्रावास के उद्घाटन समय महाराज ने कहा था कि "जातिभेद तोडना जरूरी है, जातिभेद करना पाप है, देश की प्रगति में बाधा है, यह भेद दुर करना चाहिए।"

आरक्षण

कोल्हापूर राजकारोबार में ब्राम्हणों का बोलबाला था यह बात महाराज को पसंद नही थी इसलिए 50 प्रतिशत आरक्षण का आदेश उन्होने अपने जन्मदिन 26 जूलाई 1902 को निकाला। इस क्रान्तिकारी निर्णय से बहुजन समाज में हर्षोल्लास निर्माण हुआ उन्होने कुलकर्णी वतन समाप्त करके तलाठी यह पद निर्माण किया इस प्रकार जो पिछडा वर्ग था उनको सही स्थान मिलने लगा। इसलिय सामाजिक क्रांति के अग्रदूत छत्रपति शाहू महाराज को माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. महाराष्ट्रातील आंबेडकरी चळवळीचा इतिहास (मराठी)– डॉ. अनील शिंगारे, डॉ. विठ्ठल घुले
2. राजर्षी शाहू छत्रपति (मराठी)– धनंजय कीर
3. भारतीय इतिहास आणि ग्रंथ (मराठी) – देसाई स. शं